The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 12 | December 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' और उनकी कोरोना काव्यकृति लॉकडाउन

विवेक मौर्य

शोधार्थी, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)

ई-मेलः vivekmauryamridul@gmail.com

प्रो0 डॉ0 क्षमा मिश्रा

शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, जयनारायण पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ (उ0प्र0)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18258583

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 29-12-2025

Published: 10-01-2026

Keywords:

लॉकडाउन, प्रवासी मजदूर, विश्वव्यापी, बेबाक, कोरोना

ABSTRACT

श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने विश्वव्यापी महामारी कोविड-19 के दौर में मानवीय रिश्तों और संवेदनाओं को तहस-नहस होते हुए देखा है। इस अभूतपूर्व महामारी की रोकथाम के उपायों में लॉकडाउन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लॉकडाउन ने इस बीमारी के संक्रमण से तो मानव सभ्यता को बचाया है, लेकिन सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, सांस्कृतिक परिवेश पर गहरा असर भी छोड़ा है। इन्हीं की काव्यमयी अभिव्यक्तियों को लेकर उनका नया कविता संग्रह लॉकडाउन आया है। वे इस दौर में जहाँ दुनिया के तमाम हिस्सों में पलायन को विवश प्रवासी मजदूरों की पीड़ा और संघर्ष का आँखों देखा बयान प्रस्तुत करते हैं, वहीं गाँव, घर की ओर लौटते श्रमिकों को आशा और उत्साह का संदेश भी देते हैं।

मूल आलेख-

सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' नार्वे में विगत कई दशकों से रहते हुए प्रवासी साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं और पूरे विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये विख्यात है। भारत-यूरोपीय संस्कृतियों के मध्य सेतु के निर्माण और हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने में तल्लीन नार्वे निवासी प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार एवं हिन्दी सेवी सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

का अद्‌वितीय योगदान है। वे पिछले कई दशकों से भाषा, साहित्य, रंगकर्म और संस्कृति के जरिए देशान्तरों को जोड़ रहे है।

सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने अनेक काव्य और नाट्‌य कृतियाँ लिखी हैं। नार्वेजियन भाषा से हिन्दी भाषा में साहित्यानुवाद किया है। कोविड-19 महामारी में जब पूरा विश्व अपने घरों में स्रब्ध था, उन दिनों शरद आलोक जी अपनी लेखनी के माध्यम से रचनाकार होने के अपने दायित्व को बड़ी सजगता से निर्वहन कर रहे थे, उसी सजग रचनात्मकता का परिणाम है 'लॉकडान' काव्यकृति। लॉकडाउन कोरोना काल से जुड़ी दुनिया की किसी भी भाषा में प्रकाशित पहली काव्य कृति है, जो व्यापक मानवीय चिंताओं और सरोकारों को प्रत्यक्ष करती है।

कोरोना महामारी से उत्पन्न अनेक प्रकार की विषमताओं और समस्याओं को कवि ने कागज के पन्नों पर उतार दिया है। इन कविताओं में बेकारी है, मजदूरों की समस्याएँ हैं, असन्तोष और छटपटाहट है। कोरोना महामारी से उत्पन्न आक्रोश, संघर्ष और बदलते जीवन मूल्यों को कविताओं में बखूबी देखा जा सकता है। कवि को पूरा विश्वास है कि एक दिन यह कोरोना बीमारी अवश्य चली जायेगी-

बीमारी कभी तो चली जायेगी

फेसबुकियों का जहर पी जायेगी?

कोरोना के इस दौर में जहाँ दुनिया के तमाम हिस्सों में पलायन को विवश प्रवासी मजदूरों की पीड़ा और संघर्ष का आँखों देखा बयान प्रस्तुत करते हैं, वहीं गाँव, घर की ओर लौटते श्रमिकों को आशा और उत्साह का संदेश भी देते हैं-

चल पड़े हैं मजदूर, अपने-अपने घर

हाथ पर लेकर जान।

जोखिम से भरा सफर,

अभी भी निरंतर चल रहे, अपनी सीमा लाँघते प्रवासी मजदूर।।

'लॉकडाउन' कृति में 'माँ' शीर्षक से रची गयी उनकी भावपूर्ण रचना की अंतिम पंक्तियों में जो गम्भीर प्रश्न आया है, उसे मैं वैश्विक चुनौती ही कहूँगा। कविता देखिए-

सैकड़ों किलोमीटर की दूरी को सड़क पर

पैदल चलकर तय कर रही माँ,

ब्रिटेन में कोरोना से पीड़ित माँ जन्म देकर

खुद चल बसी।

भारत में जन्म देकर कोरोना पीड़ित माँ

अपनी संतान से वीडियो पर कर रही संवाद।

शरद आलोक जी आम आदमी के प्रति बहुत ही गहरी संवेदना और संस्कृति रखते हैं। लॉकडाउन के दौरान वे लोग जो उ0प्र0 और बिहार के दूर-दराज ग्राम्यांचल से निकलकर दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात जैसे राज्यों में मजदूरी करने गये थे। उन्हें अनेक प्रकार की अनिश्चितता और चिंताओं के कारण भूखे-प्यासे, खाली हाथ घर लौटना पड़ा। उन्हें जिन कष्टों का सामना करना पड़ा, उसका मार्मिक चित्रण किया गया है। जो इस संदर्भ में व्यवस्था पर व्यंग्य करती कविताओं का उदाहरण इस प्रकार है-

'जनता बाजाए थाली और नेता ठोके ताली'

और 'जब जहाज फूल बरसाते' आदि।

'लॉकडाउन' की कविताएँ इन तात्कालिक संदर्भों पर ही नहीं वरन् अन्य अनेक जीवन व्यापी समस्याओं पर भी लिखी गयी है। वस्तुतः रचनाकार गाँधी के सेवाधर्म से प्रभावित होकर सेवा और श्रमदान की प्रेरणा देता है। शरद आलोक जी का मंतव्य है कि श्रम करना केवल मजदूर का ही धर्म नहीं वरन् हरेक का कर्त्तव्य होना चाहिए-

"अवकाश बाद श्रमदान करें,

आओ मिलकर मार्ग बनाएँ।

गाँव-गाँव में राह बनाएँ,

सबको पानी साफ पिलाएँ।।' '

कोविड-19 के संक्रमण से उपजे संकट को वे मानवीय परीक्षा की घड़ी मानते हैं, जहाँ बेहद धैर्य की जरूरत है। फिर यह स्वयं को सिद्ध करने का मौका भी है। 'गाँवों को आदर्श बनाना है' शीर्षक कविता में रचनाकार का संकेत साफ है-

''लॉकडाउन एक संकट है

उसे उम्मीद में बदलने का

मजदूर अपने गाँव आये हैं

उनसे कौशल विकास सीखना है।' '

शरद आलोक जब अपनी बेबाक बयानी पर आते हैं तो बड़ी निर्भीकता से लेखनी चलाते हैं, उन्होंने लगभग पूरी दुनिया को घूम-घूमकर देखा है, वे कागज लेखी पर कम आँखिन देखी पर ज्यादा विश्वास करते हैं। लॉकडाउन के दौरान उन्होंने जो देखा और महसूस किया। उसको अपनी लेखनी में भरसक पिरोने का प्रयास किया है।

अपनी इज्जत बचाने

कोरोना संकट के चार हफ्ते बाद,

खिसियाकर विज्ञापन देकर

मरे हुए लोगों के एकाउंट में

पैसे डाल रहे हो।

'लॉकडाउन' पेज-47

इस काव्य कृति में रचनाकार ने विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य को धैर्य और संयम का पाठ पढ़ाया है साथ ही मनुष्य की अतिचार-वृत्ति को रोकने के लिए संदेश भी दिया है। 'लॉकडाउन' की कविताएँ, डर, निराशा और अवसाद के बीच आशा का दीप बनकर प्रज्वलित हुआ है। अविधिक और मानवीय कृत्यों से बचने का एकमात्र साधन साहित्य और सत्संग है।

इस संकलन में उनकी लगभग 4 दर्जन कविताएँ संकलित हैं। इनमें भाव, भाषा, शिल्प और चिंतन की विविधता दिखायी देती है। कोविड-19 अन्तर्राष्ट्रीय मानव संवेदना का समराम बनकर फैला है। इसने हमारी सोंच पर अभिराम प्रभाव डाला है।

- **<u>संदर्भ सूची-</u>**

- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0-64
- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0-50
- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0 107
- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0 101
- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0 52-56
- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0 47
- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0 104
- लॉकडाउन, काव्यकृति, पृ0 83